मेवाड़ का इतिहास

- क्षेत्र – उदयपुर, चित्तौड़, राजसमंद, भीलवाड़ा, प्रतापगढ़
- प्राचीन नाम – मेदपाट / प्रागवाट
- महाभारत काल में शिवी जनपद कहा जाता था जिसकी राजधानी मध्यमिका (नगरी–चित्तौड़गढ़) थी
- वंश – गुहिल वंश/सिसोदिया वंश ने शासन किया
- कुलदेवी –बाण माता, इष्ट देवी –अन्नपूर्णा माता
- कुल देवता – एकलिंग जी
- रक्त तिलक –
- मेवाड महाराणा का राजतिलक उन्दरी गाँव (ईडर) का भील राजा अपने अंगूठे के रक्त से करता था
- मेवाड़ झंडे का वाक्य– जो दृढ़ राखे धर्म, तिहि राखे करतार
- उत्पत्ति –
- कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार गुहिलो की उत्पत्ति वल्लभी (गुजरात) के शासक वंश से हुई है
- अबुल फजल के अनुसार मेवाड़ शासक ईरान के शासक नौशेर खाँ आदिल की संतान थे
- डी.आर. भंडारकर, गोपीनाथ शर्मा, दशरथ शर्मा, जे.एन. आसोपा, मुहणौत नैंणसी – गुहिल वंश की उत्पत्ति ब्राह्मण वंश से मानते हैं
- मेवाड़ शासक स्वयं को भगवान राम का वंशज मानते हैं
- पंडित गौरीशंकरी हीराचंद ओझा सूर्यवंशी मानता है
- कर्नल जेम्स टॉड व मुहणौत नैंणसी गुहिल वंश की 24 शाखा बताते हैं व कवि श्यामलदास ने गुहिलो की 36 शाखा बताई हैं

❖ गुहिल / गुहिलादित्य –

- गुहिल वंश का संस्थापक/आदिपुरुष – 566 ई
- लालन पालन गुफा में कमलावती ब्राह्मणी ने किया

❖ बप्पा रावल (734 – 753 ई)–

- मूल नाम – कालभोज
- बप्पा रावल हारित ऋषि की गाये चराता था, हारित ऋषि के आशीर्वाद से ही बप्पा रावल ने मेवाड़ का राज्य प्राप्त किया
- 734 ई में चित्तौड़गढ़ शासक मानमौर्य को पराजित कर चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर नागदा को राजधानी बनाया
- गुहिल साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक
- कैलाशपुरी गांव में एकलिंगनाथ जी का मंदिर बनाया

> नोट – एकलिंग जी (लकुलीश–शैव संप्रदाय) मेवाड़ महाराणाओं के कुल देवता हैं

- मेवाड़ महाराणा खुद को एकलिंग जी का दीवान कहते हैं
- मेवाड़ में सोने के सिक्के चलाये
- उपाधि – चक्कवै, हिन्दुआ सूरज (गुहिल वंश के सभी शासक स्वयं को हिन्दुआ सूरज कहते हैं)

❖ अल्लट –

- उपाधि – आलू रावल (ख्यात साहित्य में)
- हूण राजकुमारी हरियादेवी से विवाह किया
- आहड को दूसरी राजधानी बनाया व आहड में वराह मंदिर का निर्माण कराया
- सर्वप्रथम मेवाड़ में नौकरशाही की शुरूआत की

❖ रणसिंह / कर्णसिंह –

- इनके दो पुत्र क्षेमसिंह व राहप हुए
- क्षेमसिंह ने रावल शाखा को चलाया व राहप ने सिसोदा गांव की स्थापना कर राणा शाखा (सिसोदिया वंश) की नींव डाली

❖ रावल सामन्त सिंह –

- इनके समय कीतू चौहान ने मेवाड़ पर अधिकार कर लिया तब इन्होंने वागड़ राज्य की स्थापना की

❖ रावल जैत्रसिंह (1213 – 1253 ई)–

- भूताला का युद्ध – 1227 ई
- दिल्ली के गुलाम वंश के सुल्तान इल्तुतमिश व जैत्रसिंह के मध्य हुआ जिसमें जैत्रसिंह की विजय हुई
- इस युद्ध की जानकारी जयसिंह सूरी के ग्रंथ हम्मीर मदमर्दन में मिलती है
- जैत्रसिंह ने चित्तौड़गढ़ को राजधानी बनाया
- डॉक्टर दशरथ शर्मा के अनुसार मध्यकालीन मेवाड़ के इतिहास का स्वर्णकाल रावल जैत्रसिंह का काल है
- डॉ गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कहा – दिल्ली के गुलाम वंश के सुल्तानों के समय में मेवाड़ के राजाओं में सबसे प्रतापी और बलवान राजा जेत्रसिंह ही हुआ, जिसकी वीरता की प्रशंसा उसके विरोधियों ने भी की है

❖ रावल तेजसिंह –

- इनके समय कमलचंद्र द्वारा ताड़पत्र पर चित्रित प्रथम ग्रंथ 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' चित्रित किया गया
- परमभट्टारक, महाराजाधिराज, परमेश्वर की उपाधि धारण की
- इनकी पत्नी जेतलदेवी ने चित्तौड़गढ़ में श्याम पार्श्वनाथ मंदिर का निर्माण कराया

❖ समरसिंह

❖ रावल रतनसिंह (1302 – 1303 ई)–

- गुहिल वंशीय रावल शाखा का अंतिम शासक
- ● अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के कारण –
- चित्तौड़ का व्यापारिक व सामरिक महत्व
- अलाउद्दीन का साम्राज्यवादी होना
- डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार रावल रतनसिंह की सुंदर रानी पद्मिनी को प्राप्त करना (1540 ई में मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा लिखित पद्मावत ग्रंथ में जानकारी)
- ● रानी पद्मिनी –
- सिंहलद्वीप (श्रीलंका) की राजकुमारी
- पिता – गोवर्धन (गंधर्वसेन)
- माता – चंपावती
- हीरामन तोते ने रानी पद्मिनी की सुंदरता का उल्लेख रावल रतनसिंह के सामने किया
- रतनसिंह के दरबार में राघव चेतन पद्मिनी पर बुरी नजर रखता था इसलिए रतनसिंह ने इसको निकाल दिया
- राघव चेतन ने अलाउद्दीन खिलजी के सामने जाकर पद्मिनी की सुंदरता का वर्णन किया
- गोरा–बादल रतनसिंह के सैनिक थे जो क्रमशः रानी पद्मिनी के चाचा – भाई थे
- ● चित्तौड़गढ़ दुर्ग का प्रथम साका – 26 अगस्त 1303
- जौहर – रानी पद्मिनी
- केसरिया – रावल रतनसिंह
- मेवाड़ का प्रथम साका
- इस युद्ध का वर्णन अमीर खुसरो ने आंखों देखा अपने ग्रंथ खजाइन–उल–फुतूह (तारीख ए अलाई) में किया है
- अलाउद्दीन खिलजी ने दुर्ग अपने पुत्र खिज्र खाँ को सौंप दिया व चित्तौड़गढ़ दुर्ग का नाम खिज्राबाद कर दिया
- बाद में चित्तौड़गढ़ का किला अलाउद्दीन खिलजी ने खिज्र खाँ से मालदेव सोनगरा को सौंप दिया

❖ राणा हम्मीर (1326 – 1364 ई) –

- सिसोदिया सम्राज्य का संस्थापक जिनकी उपाधि राणा / महाराणा थी 200 साल पहले
- अरिसिंह जी के पुत्र व राणा लक्ष्मणसिंह जी के पौत्र थे
- सिसोदा ठिकाने के जागीरदार हम्मीर ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर 1326 में अधिकार किया – मारवाड़ - दुर्गादास
- राणा हम्मीर को मेवाड़ का उद्धारक कहा जाता है
- कीर्ति स्तम्भ में विषम घाटी पंचानन (विकट आक्रमणों में सिंह के समान) व रसिक प्रिया टीका में महाराणा कुम्भा ने राणा हम्मीर को वीर राजा कहा
- चित्तौड़ में अन्नपूर्णा माता का मंदिर बनाया
- ● सिंगोली (बांसवाड़ा) का युद्ध – 1336 ई
- राणा हम्मीर व मुहम्मद बिन तुगलक के मध्य हुआ जिसमें राणा हम्मीर की विजय हुई

❖ राणा क्षेत्रसिंह (1364 – 1382 ई) –

- राणा क्षेत्रसिंह / खेता ने मालवा के दिलावर खां गौरी को परास्त कर भविष्य में होने वाले मालवा– मेवाड़ के संघर्ष को आरंभ किया

❖ राणा लक्षसिंह / लाखा (1382 – 1421 ई) –

- इनके समय जावर से चांदी की खान निकली जिससे राज्य का आर्थिक विकास हुआ लाखा - खान
- इनके समय छीतर बंजारे द्वारा पिछोला झील बनायी गई
- पिछोला झील पर नटनी का चबूतरा है
- दरबारी विद्वान – धनेश्वर भट्ट, झोंटिग भट्ट
- ● कुम्भा हाडा – बूंदी के नकली दुर्ग की रक्षा करते हुए राणा लाखा के साथ लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुए

❖ राणा चूंड़ा –

- मेवाड़ का भीष्म पितामह
- मारवाड के राव रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई की सगाई का नारियल राणा चूड़ा के लिए भेजा लेकिन हंसाबाई की शादी राणा लाखा के साथ इस शर्त पर की गई कि इनसे उत्पन्न पुत्र ही मेवाड़ का शासक बनेगा
- राणा चूंडा ने प्रतिज्ञा ली की मेवाड़ की गद्दी पर उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं बैठेगा

❖ महाराणा मोकल (1421 – 1433 ई) –

- राणा लाखा व हंसाबाई का पुत्र
- मोकल जब शासक बना तब इसका संरक्षक राणा चूंड़ा रहा लेकिन हंसाबाई ने अपने भाई रणमल को बुला लिया
- राणा मोकल ने परमार भोज द्वारा बनाये गये त्रिभुवन नारायण मंदिर का जीर्णोद्धार कराया, इस मंदिर को मोकल का मंदिर / समिद्धेश्वर मंदिर कहते हैं
- मना, फना, विसल जैसे शिल्पी व योगेश्वर और भट्ट विष्णु नामक विद्वान इनके दरबार में रहते थे

- ● जीलवाड़ा अभियान –1433 ई
- महाराणा मोकल जीलवाड़ा अभियान में गये थे वहा महपा पंवार के कहने पर चाचा–मेरा ने मोकल की हत्या कर दी

❖ महाराणा कुम्भा (1433 – 1468 ई) –

- पिता –मोकल, माता–सौभाग्य देवी
- सारंगपुर (मध्यप्रदेश) का युद्ध – 1437 ई
- मालवा के महमूद खिलजी ने महपा पंवार को शरण दी थी
- महाराणा कुम्भा व मालवा (मांडू) के महमूद खिलजी प्रथम के मध्य हुआ जिसमें महाराणा कुम्भा की विजय हुई, कुम्भा ने महमूद खिलजी को 6 माह तक कैद रखा फिर छोड़ दिया
- इस विजय की स्मृति में महाराणा कुंभा ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में अपने आराध्य देव भगवान विष्णु को समर्पित विजय स्तंभ का निर्माण (1440–1448 ई) कराया
- नागौर विजय –
- नागौर पर अधिकार के लिए शम्स खां व उसके छोटे भाई मुजाहिद खां लड़ रहे थे
- महाराणा कुंभा की सैन्य सहायता से शम्स खां नागौर का शासक बनता है लेकिन शम्स खां ने कुम्भा की शर्त नहीं मानी तो महाराणा कुंभा ने नागौर पर अधिकार कर लिया, शम्स खां गुजरात शासक कुतुबुद्दीन शाह के पास चला गया
- चम्पारण / चंपानेर (गुजरात) की संधि – 1456 ई
- कुतुबुद्दीन शाह व मालवा के महमूद खिलजी प्रथम के मध्य
- शर्त – दोनों मिलकर महाराणा कुंभा को हरा देंगे व मेवाड़ को आपस में बांट लेंगे
- बदनोर (ब्यावर) का युद्ध – 1457 इ
- महाराणा कुंभा ने कुतुबुद्दीन शाह व महमूद खिलजी प्रथम की संयुक्त सेना को हराया व बदनोर में कुशालमाता के भव्य मंदिर का निर्माण कराया
- महाराणा कुम्भा की स्थापत्य कला –
- वीर विनोद ग्रंथ के लेखक श्यामलदास के अनुसार कुंभा ने मेवाड़ में 84 में से 32 दुर्गों का निर्माण कराया
- महाराणा कुम्भा ने कुभंलगढ दुर्ग, बसन्ती दुर्ग (सिरोही), अचलगढ दुर्ग (सिरोही), बैराठ दुर्ग (बदनौर–ब्यावर), भोमट दुर्ग, मचान दुर्ग (सिरोही) का निर्माण कराया
- महाराणा कुंभा को राजस्थानी वास्तुकला (स्थापत्य कला) का जनक कहते हैं
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में कुंभश्याम मंदिर (1448 ई), श्रृंगार चँवरी मंदिर का निर्माण कराया
- साहित्य –
- कुम्भा के संगीत गुरु – सारंग व्यास
- कुम्भा के काव्य गुरु – कान्ह व्यास
- कुम्भा के गुरु / चित्रकला गुरु – जैनाचार्य हीरानंद मुनि (इन्हें कविराज की उपाधि दी)

- महाराणा कुंभा के संगीत पर ग्रंथ –
- संगीत राज – सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है इसके पाँच भाग हैं
  (1) पाठ रतन कोष (2) गीत रतन कोष
  (3) वाद्य रतन कोष (4) नृत्य रतन कोष (5) रस रतन कोष
- संगीत मीमांसा, सूड प्रबन्ध / सुधा प्रबन्ध, चण्डीशतक, कामराज रतिसार
- जयदेव के गीत गोविंद पर कुंभा ने रसिक प्रिया टीका लिखी
- एकलिंग महातमय ग्रंथ (संस्कृत भाषा में) कान्ह व्यास ने लिखा था लेकिन महाराणा कुंभा ने इसके प्रथम भाग राजवर्णन को लिखा था
- महाराणा कुंभा का शिल्पी मंडन था, मंडन का भाई नाथा (पुस्तक – वास्तुमंजरी) व पुत्र गोविंद था
- शिल्पी मंडन की पुस्तक –

प्रासाद मंडन	महलों के बारे में जानकारी
रूप मंडन	मूर्तियों के बारे में
राजवल्लभ	सामान्य आवास, गृह का वर्णन
कोदण्ड मंडन	धनुष विद्या के बारे में
देवमूर्ति प्रकरण (रूपावतार मंडन)	मूर्ति स्थापना
शकुन मंडन	शगुन, अपशगुन का वर्णन
वैध मंडन	व्याधियां व निदान से संबधित

- वास्तु मंडन, वास्तु सार, वास्तु शास्त्र भी मंडन की पुस्तक है
- महाराणा कुंभा वीणा बजाने में रुचि रखते थे
- महाराणा कुंभा की पुत्री रमाबाई को संगीत में रुचि के कारण वागीश्वरी देवी की उपाधि प्राप्त थी
- कुम्भा के दरबारी विद्वान –
- सोम सुंदर, मुनिसुंदर, जयचंद सूरी, मुनि जिनसेन सुरी, सोमदेव, भुवनचंद सूरी, सुंदरसूरी, सुंदरगुणि, टिल्ला भट्ट,नाथा, अत्री – महेश आदि विद्वान महाराणा कुंभा के दरबार में थे
- महाराणा कुम्भा की उपाधियां –
- अभिनव भरताचार्य – संगीत का ज्ञान होने के कारण
- हाल गुरु – गिरी दुर्गों का स्वामी होने के कारण
- शैल गुरु – युद्व में निपुण होने के कारण
- छाप गुरु – छापामार युद्ध के कारण
- हिंदू सुरताण – मुस्लिम शांसको से रक्षा करने के कारण
- राय रासो / राणो रासो– विद्वानों का आश्रयदाता
- राजगुरु – राजनीति में दक्ष, अश्वपति – कुश्ल घुडसवार
- नरपति – मानव में श्रेष्ठ, परम गुरु, दानगुरु
- चाप गुरु (धनुष अच्छा चलाने के कारण)
- अंतिम समय में महाराणा कुंभा को उन्माद रोग हो गया था
- उदा ने मामादेव कुंड (कुंभलगढ़) में कुंभा की हत्या कर दी

❖ उदा सिसोदिया (1468 – 1473 ई)–

- मेवाड़ का पितृहंता
- इनके भाई रायमल ने इनको दाडिमपुर के युद्ध में परास्त किया, उदा मालवा की ओर भाग गया, जहां बिजली गिरने से इसकी मृत्यु हो गई

❖ महाराणा रायमल (1473 – 1509 ई)–

- एकलिंग जी के मंदिर का पुनर्निर्माण कराया
- इनकी पत्नी श्रृंगार देवी ने घोसूण्डी की बावड़ी (चित्तौड़) का निर्माण कराया
- अर्जुन प्रमुख शिल्पी तथा गोपाल भट्ट, महेश अच्छे विद्वान थे

❖ पृथ्वीराज सिसोदिया / उड़ना राजकुमार –

- अजमेर दुर्ग के चारों ओर परकोटा बनाकर इसका नाम अपनी रानी ताराबाई के नाम पर तारागढ़ रख दिया
- 12 खभों की छतरी – कुंभलगढ़ दुर्ग
- पृथ्वीराज, जयमल, सांगा के चाचा सारंगदेव भीमलगांव की चारण जाति की पुजारिन महिला से मेवाड़ के अगले शासक के बारे में पूछने के लिए गये, महिला ने महाराणा सांगा के राजा बनने की भविष्यवाणी की
- पृथ्वीराज ने राणा सांगा की आंख फोड़ दी
- राणा सांगा भागकर सैवन्त्री गांव पहुंचा जहां राठौड बिदा ने राणा सांगा को शरण दी, बीदा जयमल के साथ लड़ता हुआ मारा गया
- यहां से सांगा अजमेर पहुंचा जहां रावत कर्मचंद ने शरण दी

❖ महाराणा संग्रामसिंह / राणा सांगा (1509 – 1528 ई)–

- जन्म – 12 अप्रैल 1482
- शरीर पर 80 घाव होने के कारण कर्नल जेम्स टॉड ने सैनिक का भग्नावशेष कहा है
- राणा सांगा को हिन्दुपत कहा जाता है,

> सांगा अंतिम भारतीय हिंदू राजा था जिसके नीचे सभी राजपूत जातियां विदेशियों को भगाने के लिए एक हुवी थी

- **खातौली (पीपलदा – कोटा) का युद्ध – 1517 ई**
- राणा सांगा की बढ़ती हुई शक्तियों से भयभीत होकर इब्राहिम लोदी (सिकंदर लोदी का पुत्र) ने आक्रमण कर दिया
- राणा सांगा की विजय हुई
- सांगा ने इब्राहिम लोदी के पुत्र को बंदी बना लिया
- इस युद्ध में राणा सांगा लंगड़ा हो गया था
- **बाडी (धौलपुर) का युद्ध – 1518 ई**
- इब्राहिम लोदी ने अपने दो सेनापति मियाँ माखन, मियाँ हुसैन को भेजा, राणा सांगा की विजय हुई
- राणा सांगा उत्तर भारत का शक्तिशाली शासक बन गया
- **गागरोन का युद्ध – 1519 ई**
- मालवा के महमूद खिलजी द्वितीय ने चंदेरी के शासक मेदिनीराय पर आक्रमण कर दिया
- राणा सांगा ने मेदिनीराय को गागरोन की जागीर दे दी
- महमूद खिलजी द्वितीय व राणा सांगा के मध्य युद्ध हुआ जिसमें राणा सांगा की जीत हुई
- सांगा ने महमूद खिलजी द्वितीय को 6 माह तक कैद रखा फिर छोड़ दिया
- **गुजरात विजय – 1520 ई**
- उत्तराधिकार के लिए रायमल व भारमल में संघर्ष चल रहा था, राणा सांगा ने रायमल का साथ देकर ईडर (गुजरात) का शासक रायमल को बना दिया
- गुजरात शासक मुजफ्फर शाह ने ईडर पर आक्रमण किया जिसमें राणा सांगा की जीत हुई
- **महाराणा सांगा – बाबर**
- महाराणा सांगा ने अफगान सेनापति हसन खां मेवाती व महमूद लोदी (इब्राहिम लोदी का भाई) को शरण दी थी
- **ब्याना (भरतपुर) का युद्ध – 16 फरवरी 1527**
- बाबर की ओर से मेहंदी ख्वाजा (बाबर का बहनोई) ने ब्याना दुर्ग पर अधिकार कर लिया
- राणा सांगा ने सेना भेजकर ब्याना दुर्ग जीत लिया
- इस विजय के बाद अरबी ताशा वाद्ययंत्र (मुगलों का वाद्ययंत्र) को मेवाड़ के सैनिक यंत्रों में शामिल किया गया

> नोट – 16 वी, 17 वी शताब्दी में बयाना में नील का कारोबार अत्यन्त विकसित था

- **खानवा का युद्ध – 17 मार्च 1527 ई**
- रूपवास (भरतपुर) में गंभीर नदी किनारे
- जहीरूद्दीन मुहम्मद बाबर व राणा सांगा के मध्य हुआ
- बाबर इस युद्ध को जिहाद (धर्म युद्ध) घोषित करता है
- बाबर ने शराब नहीं पीने, तमगा कर (मुगल व्यापारियो पर लगने वाला कर) हटाने के लिए कहा
- काबुल से आये ज्योतिषी मुहम्मद शरीफ ने राणा सांगा के विजय की घोषणा की थी
- राणा सांगा ने पाती परवन प्रथा चलाई
- राजस्थान के 7 राजा, 9 राव, 104 सरदार राणा सांगा की सहायता के लिए आये
- खानवा विजय के बाद बाबर ने गाजी (काफिरो को मारने वाला) की उपाधि धारण की
- बाबर ने अपनी किताब तुजुक–ए–बाबरी / बाबरनामा में खानवा युद्ध को अपने जीवन का काला दाग कहा

● राणा सांगा की सहायता करने वाले शासक –

अफगान सुल्तान	महमूद लोदी
मेव शासक	हसन खा मेवाती (सांगा का सेनापति)
मारवाड़	राव मालदेव (राव गांगा का पुत्र)
बीकानेर	राव कल्याणमल (राव जैतसी का पुत्र)
आमेर	पृथ्वीराज कच्छवा
मेड़ता	रायमल राठौड़, वीरमदेव मेड़तिया
चंदेरी	मेदिनीराय
ईडर	भारमल
वागड (डूंगरपुर)	महारावल उदयसिंह
देवलिया (प्रतापगढ़)	रावत बाघसिंह
अजमेर	कर्मचंद पंवार
जगनेर (उत्तरप्रदेश)	अशोक परमार
सादड़ी	झाला अज्जा
सलूम्बर	रतनसिंह चुंडावत
सिरोही	अखैराज देवड़ा
परमार वंश के	गोकुलदास परमार
नागौर	खानजादा
रायसीन	सलहदी तँवर

- युद्ध में राणा सांगा के तीर लगने से बेहोश हो जाने पर सादड़ी के झाला अज्जा ने राजचिन्ह धारण किया
- खानवा युद्ध में बाबर की विजय हुई

● हार के कारण –

- बाबर का तोपखाना, तुलुगमा पद्धति
- रायसीन के सलहदी तंवर व नागौर के खानजादा का अंतिम समय में बाबर से मिल जाना
- बाबर के तीरंदाज (बाबर ने जीत का श्रेय इन्हें दिया)
- राणा सांगा के बेहोश होने पर इन्हें बसवा (दौसा) लाया गया जहां राणा सांगा का इलाज हुआ
- सांगा का चबूतरा – बसवा (दौसा)
- राणा सांगा ने बाबर को हराने की शपथ ली लेकिन मेवाड़ी सरदारों ने राणा सांगा को जहर दे दिया
- कालपी (उतरप्रदेश) में 30 जनवरी 1528 को राणा सांगा की मृत्यु हो गई
- राणा सांगा का अंतिम संस्कार मांडलगढ़ (भीलवाड़ा) में किया गया, यहीं पर राणा सांगा की 8 खभों की छतरी है

> बाबर ने सांगा के बारे में लिखा – उसका मुल्क 10 करोड़ की आमदनी का था, उसकी सेना में 1 लाख सवार थे

- राणा सांगा ने देश की रक्षा में एक आंख, एक हाथ, एक पैर खो दिया था

> पानीपत का प्रथम युद्ध – 21 अप्रैल 1526 ई को बाबर व इब्राहिम लोदी के मध्य हुआ जिसमें बाबर ने तोप, बारूद का प्रयोग करके इब्राहिम लोदी को मारकर भारत में मुगल वंश की नींव रखी थी
>
> बाबर की पुस्तक –बाबरनामा / तुजुक ए बाबरी(तुर्की भाषा) है इसका अब्दुल रहीम जी ने फारसी भाषा में अनुवाद किया
>
> बाबर ने चार युद्ध लड़े –पानीपत का युद्ध, खानवा का युद्ध, चंदेरी का युद्ध (जनवरी 1528 ई), घाघरा का युद्ध – 1529 ई

❖ महाराणा रतनसिंह (1528 – 1531 ई) –

- राणा सांगा के पुत्र भोजराज (मीराबाई का पति) का खातौली युद्ध में घायल हो जाने से निधन हो गया था
- राणा सांगा के पुत्र रतनसिंह बूंदी के सूरजमल हाडा के साथ अहेरिया उत्सव (आखेट) खेलते समय मारे गये

❖ महाराणा विक्रमादित्य (1531– 1536 ई) –

- महाराणा सांगा व हाड़ी रानी कर्मावती का पुत्र था
- इनके समय 1533 ई में गुजरात के शासक बहादुर शाह ने आक्रमण किया, कर्मावती ने रणथम्भौर दुर्ग देकर बहादुरशाह से संधि कर ली लेकिन 1535 ई में बहादुरशाह ने पुनः आक्रमण किया, चित्तौड़ की रक्षा हेतु कर्मावती ने हुमायूं को राखी भेजी
- हुमायूं समय पर नहीं आया तो हाड़ी रानी कर्मावती ने अपने दोनों पुत्रों विक्रमादित्य व उदयसिंह को अपने मायके (बूंदी) भेज दिया

● चित्तौड़ का दूसरा साका – 1535 ई

- केसरिया – देवलिया के रावत बाघसिंह
- जौहर – कर्मावती व विक्रमादित्य की पत्नी जवाहर बाई ने
- पृथ्वीराज सिसोदिया के दासी पुत्र बनवीर ने 1536 ई में विक्रमादित्य की हत्या कर दी
- पन्नाधाय ने अपने बेटे चंदन का बलिदान देकर उदयसिंह के प्राण बचाये व उदयसिंह को चित्तौड़गढ़ दुर्ग से निकालकर कुंभलगढ़ दुर्ग में 'आशा देवपुरा' किलेदार के पास भेज दिया

❖ महाराणा उदयसिंह (1537–1572 ई) –

- 1537 ई में राज्याभिषेक कुंभलगढ़ दुर्ग में हुआ

● मावली का युद्ध – 1540 ई

- उदयसिंह ने मालदेव के सहयोग से बनवीर को पराजित कर चित्तौड़ पुनः प्राप्त प्राप्त कर लिया
- गिरी सुमेल युद्ध के बाद शेरशाह सूरी मेवाड़ की तरफ आ रहा था तब उदयसिंह ने किले की चाबियां शेरशाह के पास भिजवा दी इस पर कर्नल टॉड ने कहा कि – यदि राणा सांगा और प्रताप के बीच में उदयसिंह नही होता तो मेवाड का इतिहास और अधिक उज्जवल होता

- शेरशाह ने ख्वास खां को चित्तौड़ में अपना प्रतिनिधि रखा
- 1559 ईस्वी में उदयसागर झील का निर्माण कर उदयपुर नगर बसाया तथा उदयपुर को राजधानी बनाया
- अकबर का आक्रमण –1567 ई
- राणा उदयसिंह ने मांडू के सुल्तान बाज बहादुर व मेड़ता के शासक जयमल को शरण दी थी
- राणा उदयसिंह चित्तौड़गढ़ दुर्ग जयमल मेड़तिया को सौंपकर स्वयं गोगुन्दा की पहाड़ियों में चला गया
- रात के समय चित्तौड़ किले की मरम्मत करते समय जयमल अकबर की संग्राम बंदूक से घायल हो गया
- चित्तौड़गढ़ दुर्ग का तीसरा साका – 25 फरवरी 1568
- केसरिया – जयमल मेड़तिया, फता सिसोदिया
- जौहर – फता की पत्नी फूलकंवर के नेतृत्व में
- कल्ला राठौड़ ने अपने चाचा जयमल को अपने कंधे पर बैठाकर युद्ध किया
- चित्तौड़ विजय के बाद अकबर ने 30,000 व्यक्तियों का कत्लेआम करवाया जो अकबर के जीवन का अमिट कलंक है
- अकबर ने मेवाड में एलची सिक्के जारी करवाये
- अकबर ने आगरा दुर्ग के बाहर जयमल व फता की गजारुढ पाषाण मूर्तियां लगवाई, बाद में औरंगजेब ने तोड दी

नोट – बीकानेर महाराजा रायसिंह ने भी जूनागढ किले के बाहर जयमल व फत्ता सिसोदिया की मूर्तियाँ लगाई थी

- 28 फरवरी 1572 को होली के दिन गोगुंदा में महाराणा उदयसिंह की मृत्यु हो गई
- महाराणा उदयसिंह की छतरी – गोगुंदा (उदयपुर)

❖ महाराणा प्रताप (1572 – 1597 ई) –

- जन्म – 9 मई 1540 ई (ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया – रविवार)
- स्थान – कुंभलगढ़ के बादल महल – जूनी कचहरी
- पिता – राणा उदयसिंह का ज्येष्ठ पुत्र
- माता – जैवन्ता बाई (पाली के अखैराज सोनगरा की पुत्री)
- बचपन का नाम – कीका (भीलो के बच्चों को बोलते हैं)
- विवाह 17 वर्ष की उम्र में रामरख पंवार की पुत्री अजबदे के साथ हुआ जिनसे अमरसिंह का जन्म हुआ
- राज्याभिषेक –
- राणा उदयसिंह ने धीर बाई भटियाणी के कहने पर जगमाल को युवराज घोषित किया
- गोगुंदा में महादेव बावड़ी पर 28 फरवरी 1572 को सलूंबर के कृष्णदास चुंडावत ने महाराणा प्रताप का 32 वर्ष की उम्र में राज्याभिषेक कर दिया
- जगमाल नाराज होकर अकबर के पास चला गया, अकबर ने जहाजपुर की जागीर दे दी
- राणा प्रताप का विधिवत राज्याभिषेक – कुंभलगढ़ दुर्ग में
- अकबर के चार शिष्ट मण्डल – जमाभटो
- उद्देश्य – प्रताप से अकबर की अधीनता स्वीकार कराना

(1) जलाल खा – सितंबर 1572

(2) मिर्जा राजा मानसिंह – जून 1573

- राणा प्रताप ने मानसिंह के लिए उदयसागर झील पर भोज का आयोजन कराया लेकिन राणा प्रताप स्वंय न जाकर अपने बेटे अमरसिंह को मानसिंह के पास भेजते है

(3) भगवन्त दास कच्छवा – अक्टूबर 1573

(4) टोडरमल – दिसंबर 1573

- हल्दीघाटी (राजसमंद) का युद्ध – 18 जून 1576 ई
- गोपीनाथ शर्मा के अनुसार – 21 जून 1576
- रक्त तलाई भी कहते हैं
- खमनोर (राजसमंद) में बनास नदी किनारे अकबर व महाराणा प्रताप के मध्य युद्ध हुवा
- अकबर की 80,000 की सेना मोलेला में रूकी, अकबर का सेनापति मिर्जा राजा मानसिंह था अमो प्रलो
- महाराणा प्रताप की 20,000 की सेना लोसिंग में रूकी, महाराणा प्रताप का सेनापति– हकीम खा सूर था
- अकबर की सेना में हरावल का नेतृत्व – जगन्नाथ कछवाह
- अकबर की सेना का जनरल – आसफ खा
- कमाण्डर – मिर्जा राजा मानसिंह
- अन्य सहयोगी – सैयद हाशिम, गाजी खाँ, महतर खाँ
- महाराणा प्रताप की सेना में हरावल का नेतृत्व – हकीम खा सूरी, रामसिंह तंवर /रामशाह (ग्वालियर के राजा), सलूम्बर के कृष्णदास चूण्डावत, सादडी के झाला बीदा
- ढोलाण में – महाराणा प्रताप
- चंदावल में नेतृत्व – राणा पूँजा (भील सेना कमाण्डर), पोंदो भील पुरोहित गोपीनाथ, जयमल मेहता, चारण जैसा
- महाराणा प्रताप के अन्य सेनानायक– भामाशाह, ताराचंद, झाला मानसिंह, सोनगरा मानसिंह, रामदास बदनौर
- पहला वार मेवाड़ी सेना ने इतना खतरनाक किया कि मुगल सेना भाग खड़ी हुई लेकिन मिहतर खां ने अफवाह फैला दी की बादशाह अकबर स्वयं आ रहा है
- मुगल सेना ने राणा प्रताप को घेर लिया फिर भी प्रताप वीरता से लड़ा और बहलोल खा को घोड़े सहित काट दिया
- सादड़ी के झाला बीदा (झाला मन्ना / मान) ने राणा प्रताप का छत्र धारण किया संगा – अज्जा ने (सादड़ी)
- बिदा मुगल सेना के साथ लड़ता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ

- महाराणा प्रताप का घोड़ा चेतक टूटी टांग के साथ बलीचा के पास नाला पार करता हुआ वीरगति को प्राप्त हुआ
- चेतक की समाधि – बलीचा (राजसमंद)
- महाराणा प्रताप ने कोल्यारी गाँव पहुंच कर अपना व घायलों का उपचार कराया

- **हल्दीघाटी में विजय** – अकबर की हुवी लेकिन राजप्रशस्ति, राजप्रकाश, जगदीश मंदिर प्रशस्ति में महाराणा प्रताप को विजयी बताया है क्योंकि हल्दीघाटी युद्ध के बाद भी प्रताप ने जमीनी पट्टे ताम्रपत्र के रूप में जारी किए थे और पट्टे जारी करने का हक राजा को होता था

> **नोट – मानसिंह ने मुगल सेना को हल्दीघाटी युद्ध से पहले मांडलगढ़ में पहाड़ी प्रशिक्षण दिया था**

- **हल्दीघाटी युद्ध के उपनाम –**
- गोगुंदा का युद्ध – अब्दुल कादिर बदायूंनी (युद्ध का प्रत्यक्ष वर्णन पुस्तक–मुन्तखब उत तवारीख में किया)
- खमनौर का युद्ध – अबुल फजल
- मेवाड़ की थर्मोपल्ली – कर्नल जेम्स टॉड
- कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी पुस्तक 'एनाल्स एण्ड एंटीक्यूटीज ऑफ राजस्थान' में प्रथम बार इस युद्ध को हल्दीघाटी के नाम से संबोधित किया

- **हाथी –**
- मानसिंह का हाथी – मुरदाना
- मुगल सेना के अन्य हाथी – गजराज, गजमुक्त, रनदार
राणा प्रताप के हाथी – लूणा, रामप्रसाद
(अकबर ने रामप्रसाद का नाम पीर प्रसाद रखा)
- हल्दीघाटी युद्ध के बाद अकबर ने उदयपुर का प्रशासन आमेर के जगन्नाथ कच्छवा को सौंपा

- **शाहबाज खा का कुंभलगढ़ पर आक्रमण –**
- शाहबाज खां ने 1577–1580 के मध्य मेवाड़ पर तीन बार आक्रमण किया
- शाहबाज खां ने 1578 ई में कुंभलगढ़ दुर्ग पर अधिकार कर लिया, महाराणा प्रताप पहाड़ों में चले गए

- **भामाशाह की भेंट –**
- चूलीया गांव में भामाशाह व उनके भाई ताराचंद ने महाराणा प्रताप को 25 लाख रुपये व 20 हजार अशर्फियां भेंट की, इससे महाराणा 25 हजार की सेना का 12 वर्ष तक निर्वाह कर सकता था
- भामाशाह को मेवाड़ का उद्धारक, दानवीर कहा जाता है

- अब्दुल रहीम खान ए खाना का आक्रमण – 1580 ई
- रहीम जी ने शेरपुर गांव में अपना शिविर लगाया
- अमरसिंह इनकी बेगमों को बंदी बनाकर राणा प्रताप के पास ले गया, प्रताप ने बेगमों को सम्मान के साथ वापस भेज दिया

> **नोट – हल्दीघाटी युद्ध के बाद प्रताप ने छापामार युद्ध प्रणाली का प्रयोग किया था**

- **दिवेर का युद्ध – अक्टूबर 1582 ई**
- अकबर का काका सेरिमा सुल्तान ख़ाँ, दिवेर (राजसमंद) में शिविर लगाकर बैठा था
- अमरसिंह ने अपने भाले से सेरिमा सुल्तान खा को घोड़े सहित धराशाई कर दिया
- कर्नल जेम्स टॉड ने इस युद्ध को मेवाड़ का मैराथन कहा

- **जगन्नाथ कच्छवा का आक्रमण – 1584 ई**
- महाराणा प्रताप के विरुद्ध अकबर द्वारा भेजा गया अंतिम सैनिक अभियान था
- जगन्नाथ कछवाह की मृत्यू / 32 खम्भों की छतरी – मांडल (भीलवाड़ा) में है

- **चांवड (सराड़ा – सलूम्बर)**
- 1585 में राणा प्रताप ने चांवड के शासक लूणा को हराकर चांवड को अपनी आपातकालीन राजधानी बनाया
- चांवड 1585 – 1615 ई तक राजधानी रही

> **सराडा किले को मेवाड़ का काला पानी कहा जाता है**

- **दरबारी विद्वान –**
- राणा प्रताप के गुरु – आचार्य राघवेंद्र
- दरबारी कवि चक्रपाणि मिश्र ने चार ग्रंथों की रचना कि – विश्ववल्लभ, मुहूर्तमाला, व्यवहारादर्श, राज्याभिषेक पद्धति
- राणा प्रताप ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग और मांडलगढ़ को छोड़कर सभी क्षेत्र वापस जीत लिए थे
- राणा प्रताप को मेवाड़ केसरी, हिन्दुआ सूरज कहा जाता है
- 19 जनवरी 1597 ई को महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गई
- राणा प्रताप की 8 खम्भों की छतरी बाडोली (सलूम्बर) में केजड बांध पर बनी हुई है
- राणा प्रताप की मृत्यु पर अकबर भी दुखी हुआ था, दूरसा आढा ने मुगल दरबार में दोहा सुनाया –

  " गहलोत राणो जीत गयो, दसण मूंद रसणा डसी
  नीलास मूक भरिया नयन, तो मृत शाह प्रताप सी "

- दुरसा आढा ने राणा प्रताप की शौर्य गाथा पर विरुद्ध छतहरी की रचना की व कन्हैयालाल सेठिया ने पाथल (महाराणा प्रताप) – पीथल (पृथ्वीराज राठौड़) की रचना की

❖ महाराणा अमरसिंह प्रथम (1597 – 1620 ई) –

- अकबर के बाद जहांगीर ने शासक बनने के बाद अपने बेटे खुर्रम (शाहजहां) को मेवाड़ अभियान के लिए भेजा
- मेवाड़ सामतों ने अमरसिंह के बेटे कर्णसिंह को मेवाड प्रजा की रक्षा के लिए अधीनता स्वीकार कराने हेतु दबाव डाला
- ● मुगल – मेवाड़ संधि – 5 फरवरी 1615 ई
- मुगल बादशाह जहांगीर व अमरसिंह के मध्य संधि हुवी जिसमें संधि की शर्ते रही कि – महाराणा मुगलों के साथ वैवाहिक संबंध नहीं बनायेगा और मेवाड़ महाराणा मुगल दरबार में नहीं जायेगा बल्कि युवराज जायेगा
- चित्तौड़ दुर्ग वापस दिया जायेगा लेकिन मरमत नहीं होगी
- महाराणा अमरसिंह की छतरी – आहड (उदयपुर)
- जीवाधार महाराणा अमरसिंह का दरबारी कवि था जिसने अमरसार ग्रंथ की रचना की
- सर टामस रो ने कहा – बादशाह ने मेवाड़ के महाराणा को समझौते से अधीन किया था ना की बल से

❖ महाराणा कर्णसिंह (1620 – 1628 ई) –

- मुगल दरबार में जाने वाला प्रथम मेवाड़ युवराज
- जहांगीर ने 5000 का मनसबदार बनाया
- पिछोला झील में जगमंदिर का निर्माण कार्य शुरू कराया, इसको पूरा जगतसिंह प्रथम ने कराया
- खुर्रम (शाहजहां) ने 1622 ई में अपने पिता जहांगीर के खिलाफ विद्रोह किया तब कर्णसिंह ने जगमंदिर में शरण दी

● **जगमंदिर महल – कोटा**

- कोटा महाराव दुर्जनशाल की महारानी ब्रजकंवर ने किशोर सागर जलाशय व जगमंदिर का निर्माण कराया

❖ महाराणा जगतसिंह प्रथम (1628 – 1652 ई) –

- जगदीश मंदिर / सपनों में बना मंदिर बनाया
- जगदीश मंदिर के पास ही महाराणा ने अपनी धाय नौजूबाई के लिए धाय मंदिर बनाया
- चित्तौड़ दुर्ग की मरम्मत का कार्य प्रारंभ करवाया

❖ महाराणा राजसिंह (1652 – 1680 ई) –

- चित्तौड़ दुर्ग मरम्मत कार्य में तीव्रता लाये, शाहजहां ने सादुल्ला खां के नेतृत्व में सेना भेजकर कार्य को रुकवाया
- शाहजहां के पुत्रों के उत्तराधिकारी युद्ध में महाराणा राजसिंह ने किसी का साथ नहीं दिया
- औरंगजेब ने शासक बनते ही राणा को 6 हजार का मनसबदार बनाया तथा ग्यासपुरा, डूंगरपुर, बांसवाड़ा के परगने दे दिए

● राजकुमारी चारुमति विवाह (1669 ई)–

- किशनगढ़ के राजा मानसिंह की बहन चारुमति से औरंगजेब शादी करना चाहते थे लेकिन चारुमति से महाराणा राजसिंह ने शादी कर ली इससे औरंगजेब ने नाराज होकर महाराणा राजसिंह से अनेक परगने छीन लिए

● हाड़ी रानी सहलकंवर –

- सलूंबर के रतनसिंह चुंडावत की पत्नी व बूंदी के हाडा सरदार संग्रामसिंह की पुत्री थी
- रत्नसिंह चुंडावत औरंगजेब की सेना के साथ युद्ध करने के लिए जा रहा था तब सहलकंवर से सैनाणी (निशानी) मांगी
- सहलकंवर ने शीश काट कर दे दिया
- मेघराज मुकुल ने सैनाणी नामक कविता लिखी "चुंडावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी"
- औरंगजेब ने 1669 में मंदिर तोड़ो अभियान व 1679 में हिंदुओं पर जजिया कर लगाया जिसका विरोध महाराणा राजसिंह ने किया

● उदयपुर का युद्ध – 1680 ई

- औंगरजेब ने मेवाड पर हमला कर किलो, मंदिरो को नष्ट किया, महाराणा राजसिंह व दुर्गादास राठौड ने इस आक्रमण को विफल किया
- ● निर्माण – गोमती नदी का जल रोककर राजसमंद झील का निर्माण कराया, इसकी नौचौकी पाल पर 25 काली शिलाओं पर राज प्रशस्ति महाकाव्य खुदा हुआ है जो विश्व का सबसे बड़ा शिलालेख है जिस पर मेवाड़ का इतिहास है , इसकी रचना रणछोड भट्ट तैलंग ने संस्कृत भाषा में की
- राजनगर बसाया जो वर्तमान राजसमंद है
- विजय कटकातु की उपाधि धारण की (सैनिक जीवन)
- महाराणा राजसिंह ने श्रीनाथ जी को सिहाड तथा द्वारिकाधीश को कांकरोली (राजसमंद) में प्रतिष्ठित किराया

❖ महाराणा जयसिंह (1680 – 1698 ई) –

- 1681 ई में औरंगजेब व महाराणा जयसिंह के मध्य संधि हुई
- संधि के तहत पुर, माण्डल व बदनौर जजिया कर के बदले मुग्लों कों सौंप दिये गये
- जयसमंद झील का निर्माण कराया

❖ महाराणा अमरसिंह द्वितीय (1698 – 1710 ई) –

- देबारी समझौते (1708 ई) के तहत अपनी पुत्री चन्द्रकंवरी का विवाह सवाई जयसिंह के साथ किया

❖ महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय (1710 – 1734 ई) –

- उदयपुर में सहेलियो की बाडी और सिसारमा में वैधनाथ मंदिर (भगवान शिव का) का निर्माण कराया
- इनके समय मेवाड चित्रशैली का प्रसिद्ध चित्र 'कलीला दमना' का चित्रण हुवा

❖ महाराणा जगतसिंह द्वितीय (1734 – 1751 ई) –

- हुरडा सम्मेलन की अध्यक्षता की
- मराठो का मेवाड पर सर्वप्रथम आक्रमण हुवा
- पिछोला झील में जगनिवास महल बनाया
- अजमेर की दरगाह के लिए 4 गाँव दान दिये थे
- दरबारी कवि नेकराम ने जगतविलास ग्रंथ लिखा

❖ महाराणा भीमसिंह –

- कृष्णा कुमारी विवाद (सम्पूर्ण जानकारी–जयपुर इतिहास)
- 13 जनवरी 1818 में अंग्रेजों के साथ सहायक संधि की

❖ महाराणा सरदार सिंह –

- इनके समय भील जनजाति के उपद्रव को दबाने के लिए ईस्ट इंडिया कम्पनी ने 1841 में मेवाड भील कोर (M.B.C) का गठन किया

❖ महाराणा स्वरूप सिंह –

- स्वरूप शाही सिक्के चलाये जिन पर एक और चित्रकुट उदयपुर तथा दूसरी तरफ दोस्ती लंधन लिखा हुवा था
- 1857 की क्रांति के समय शासक
- 1844 में कन्या वध, 1853 में डाकन प्रथा और 15 अगस्त 1861 को सती प्रथा पर रोक लगाने के आदेश जारी किये
- इनकी मृत्यू पर इनकी पासवान ऐंजाबाई सती हुई जो मेवाड महाराणाओं के साथ सती होने की अंतिम घटना थी

❖ महाराणा शम्भू सिंह –

- 1866 ई में कचहरी खास, 1869 ई मे महकमा खास (सर्वोच्च न्याय अदालत) की स्थापना की

❖ महाराणा सज्जन सिंह –

- 1877 ई में महाराणा ने कवि श्यामलदास की सलाह पर 15 सदस्य सभा 'इजलास खास' का गठन किया
- 1880 ई में शासन प्रबंध व न्याय कार्य के लिए प्रजाहित में 17 सदस्य 'महेन्द्रराज सभा' का गठन किया
- **सज्जन यंत्रालय** – महाराणा सज्जनसिंह ने उदयपुर में ' इस छापखाना की स्थापना कर " सज्जन कीर्ति सुधारक " नामक साप्ताहिक समाचार पत्र 1879 में प्रकाशित कराया जो मेवाड का प्रथम प्रशासनिक समाचार पत्र था
- सज्जन वाणी विलास पुस्तकालय की स्थापना की
- 1881 ई को गर्वनर जनरल लार्ड रिपिन ने चितौड आकर महाराणा को ग्रांड कंमाण्डर ऑफ द स्टार ऑफ इंडिया का खिताब दिया
- इनके समय स्वामी दयानंद सरस्वती जी उदयपुर आये और सत्यार्थ प्रकाश की रचना की
- श्यामलदास को कविराजा की उपाधि देकर वीर विनोद ग्रंथ लिखने के लिए नियुक्त किया

❖ महाराणा फतेहसिंह –

- ब्रिटेन के राजकुमार केनॉट के मेवाड आगमन पर देवाली के नये बांध की नीव राजकुमार के हाथो रखवाकर इसका नाम केनाट बांध रखा बाद में इसका नाम फतेहसागर रखा
- भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन ने सम्राट एडवर्ड सप्तम के लन्दन में राजतिलक के अवसर पर 1903 ई में दिल्ली में दरबार लगाया था तब केसरी सिंह बारहठ ने डिंगल भाषा में 13 सोरठे 'चेतावनी रा चुंगटिया' लिखकर महाराणा को दरबार में जाने से रोका था

❖ महाराणा भूपाल सिंह –

- मेवाड के अंतिम महाराणा
- एकीकरण के समय राज्य के महाराज प्रमुख बनाये गये

गुहिलो की अन्य शाखा

❖ बागड के गुहिल

- डूंगरपुर + बाँसवाड़ा का क्षेत्र – वागड
- इस क्षेत्र री राजधानी – वद्रपटक (वर्तमान – बडौदा)
- वागड / डूंगरपुर में गुहिल वंश का संस्थापक– सामन्त सिंह
- डूंगरसिंह ने 1358 ई के लगभग डूंगरपुर नगर बसाया व राजधानी डूंगरपुर को बनाया
- डूंगरपुर नगर का नाम भीलो की पाल / डूंगरिया भील की ढाणी के नाम से भी प्रचलित है
- महारावल उदयसिंह के समय वागड का बँटवारा डूंगरपुर व बाँसवाड़ा के रूप में अपने दोनो पुत्रों में कर दिया
- डूंगरपुर का शासक पृथ्वीराज व बाँसवाड़ा का प्रथम शासक महारावल जगमाल को नियुक्त किया
- महारावल जगमाल ने बासना भील को मारकर 1530 ई के लगभग बांसवाडा में गुहिल वंश की नींव रखी
- प्रतापगढ के गुहिल वंश का प्रारम्भ राणा मोकल के दूसरे पुत्र क्षेमसिंह से हुवा
- शाहपुरा के गुहिल वंश की स्थापना अमरसिंह प्रथम के पोते सुजानसिंह ने 1631 ई में की थी